सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान मध्यप्रदेश

(विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध)

प्रान्तीय प्रश्नमंच एवं बौद्धिक समारोह

सत्र 2022-23

प्रांतीय कार्यालय

'प्रज्ञादीप' हर्षवर्धन नगर, भोपाल- 462 003

दूरभाषः *(0755) : 2761225,* **ई-मेलः** *vidyabhartibpl@gmail.com,*

Web: *www.vidyabhartimp.org*

Sanskrti mahotsv

प्रधानाचार्यों से निवेदन

- गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी बौद्धिक प्रतियोगिताऐं सम्पन्न होने जा रही है।

- इन सभी प्रतियोगिताओं का आयोजन जिला, विभाग, प्रान्त एवं क्षेत्र स्तर पर होता है, जिसकी नियमावली एवं कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी सभी विद्यालयों को प्रांत द्वारा भेजी जाती है। नियमावली में दिये गये सभी कार्यक्रम विद्यालयों में सम्पन्न करना अनिवार्य है। सभी कार्यक्रम प्रभाव पूर्ण सम्पन्न हो, इसका हमें प्रयत्न करना है।

- प्रधानाचार्यों से आग्रह है कि संस्कृति बोध परियोजना शिशु मंदिर योजना का एक विषय मात्र बनकर न रह जाए अपितु सम्पूर्ण विद्यालय परिवार, प्रबन्ध समिति, आचार्यगण, कर्मचारीगण, अभिभावकगण, भैया/बहिनों एवं अन्य विद्यालयों से जोड़ने वाला आयाम बने। इसके लिये अभियानात्मक प्रयास आवश्यक हैं।

- ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से सम्पूर्ण समाज, सांस्कृतिक अवदान एवं राष्ट्र की विरासत परिचित हो सकेगा यही अपेक्षा है।

भवदीय

(शिरोमणि दुबे)
प्रादेशिक सचिव

vuØef.kdk

fooj.k	i"B Ø-
वर्ग रचना, तिथि व स्थान	3
सहभागिता पात्रता	4—5
संस्कृति महोत्सव के समूह रचना व नियम	6—24
प्रतियोगिता संबंधी व्यवस्थाएँ	25
प्रदर्शनी व स्टॉल	26
परिचय — पत्र	27
अखिल भारतीय हिन्दी व संस्कृत गीत	28—30

प्रान्तीय प्रश्न मंच बौद्धिक समारोह

सत्र 2022–23

प्रतियोगिता की वर्ग रचना

1.	शिशु वर्ग	–	कक्षा चतुर्थी एवम् पंचमी
2.	बाल वर्ग	–	कक्षा षष्ठी से अष्टमी तक
3.	किशोर वर्ग	–	कक्षा नवमी से दशमी तक
4.	तरुण वर्ग	–	कक्षा एकादशी से द्वादशी

प्रतियोगिता का स्तर, आयोजन एवम् शुल्क

1.	**विद्यालय स्तर**		–	तिथि प्रधानाचार्य/प्राचार्य निर्धारित करेंगे।
2.	**जिला स्तर**		–	तिथि/स्थान विभाग समन्वयक निश्चित् करेंगे।
3.	**विभाग स्तर**		–	तिथि/स्थान विभाग समन्वयक निश्चित् करेंगे।
4.	**प्रांत स्तर (मध्यभारत)**	दिनांक	–	**दिनांक 30 अक्टूबर प्रात: से 31 अक्टूबर 2022 की दोपहर तक**
		स्थान	–	**सररस्वती शिशु विद्या मंदिर केशव नगर विदिशा**
		शुल्क	–	500 रु. प्रति विद्यार्थी एवं संरक्षक आचार्य। (शुल्क व मार्ग व्यय विद्यालय द्वारा देय होगा) सम्पर्क: ....
5.	**क्षेत्र स्तर**	दिनांक	–	**दिनांक 31 अक्टूबर सायंकाल से 2 नवम्बर 2022 दोप. तक (31 अक्टू. को सायं 7 बजे उद्घाटन)**
		स्थान	–	**सररस्वती विद्या मंदिर आवासीय विद्यालय, केदारधाम ग्वालियर (मध्यभारत प्रान्त)**
		शुल्क	–	700 रु. प्रति विद्यार्थी एवं संरक्षक आचार्य। (शुल्क प्रान्त द्वारा व प्रवास व्यय विद्यालय द्वारा देय होगा) सम्पर्क: ....
6.	**अखिल भारतीय स्तर-**	दिनांक	–	**11, 12 एवं 13 नवम्बर 2022**
		स्थान	–	**प्रयागराज (उ.प्र.)**
		शुल्क	–	....

प्रांतीय संस्कृति महोत्सव में अपेक्षित सहभागिता संख्या

क्र.	प्रतियोगिता का नाम	सम्मिलित कौन होगा	जिले से प्रांत स्तर तक				
			शिशु	बाल	किशोर	तरुण	योग
1	व्यक्तिगत गीत	प्रथम	1	1	1	1	4
2	निबंध प्रतियोगिता	प्रथम	1	1	1	1	4
3	रंगोली	प्रथम	1	1	1	1	4
4	चित्रकला	प्रथम	1	1	1	1	4
5	गीता पाठ	प्रथम	1	1	1	1	4
6	एकल भजन	प्रथम	1	1	1	1	4
7	तात्कालिक भाषण	प्रथम	0	0	1	1	2
8	प्रश्नमंच	केवल विजेता	3	3	3	3	12
9	कथा कथन	प्रथम	1	1	0	0	2
10	आचार्य पत्रवाचन	प्रथम	0	0	0	0	1
11	तबला वादन	प्रथम	1+1	1+1	1+1	1+1	4+4
12	शास्त्रीय गायन	प्रथम	1+2	1+2	1+2	1+2	4+8
13	शास्त्रीय नृत्य	प्रथम	1+3	1+3	1+3	1+3	4+12
14	एकल अभिनय	प्रथम	1	1	1	1	4
15	मानस प्रथमाक्षरी	प्रथम	3	3	3	3	12
16	स्वरचित कविता	प्रथम	1	1	1	1	4
17	वन्दे मातरम्	प्रथम	3	3	3	3	12
	महायोग –		**27**	**27**	**27**	**27**	**109**

क्षेत्रीय संस्कृति महोत्सव में अपेक्षित सहभागिता संख्या

क्र.	प्रतियोगिता का नाम	सम्मिलित कौन होगा	क्षेत्र स्तर तक				
			शिशु	बाल	किशोर	तरुण	योग
1	व्यक्तिगत गीत	प्रथम	1	1	1	1	4
2	निबंध प्रतियोगिता	प्रथम	1	1	1	1	4
3	रंगोली	प्रथम	1	1	1	1	4
4	चित्रकला	प्रथम	1	1	1	1	4
5	गीता पाठ	प्रथम	1	1	1	1	4
6	एकल भजन	केवल विजेता	1	1	1	1	4
7	तात्कालिक भाषण	प्रथम	0	0	1	1	2
8	प्रश्नमंच	केवल विजेता	3	3	3	3	12
9	कथा कथन	केवल विजेता	1	1	0	0	2
10	आचार्य पत्रवाचन	केवल विजेता	0	0	0	0	1
11	तबला वादन	प्रथम	1+1	1+1	1+1	1+1	4+4
12	शास्त्रीय गायन	केवल विजेता	1+2	1+2	1+2	1+2	4+8
13	शास्त्रीय नृत्य	केवल विजेता	1+3	1+3	1+3	1+3	4+12
14	एकल अभिनय	प्रथम	1	1	1	1	4
15	मानस प्रथमाक्षरी	केवल विजेता	3	3	3	3	12
महायोग –			**23**	**23**	**23**	**23**	**93**

- क्षेत्र की प्रतियोगिता में समूह क,ख,घ के सभी वर्ग के प्रथम प्रतिभागी क्षेत्र में भाग लेंगे।
- संस्कृति बोध परियोजना प्रश्नमंच चारों वर्गों के लिए अखिल भारतीय स्तर तक आयोजित होगी एवं आचार्य पत्रवाचन भी अखिल भारतीय स्तर तक होगी।
- कथा कथन शिशु एवं बाल वर्ग की ही प्रतियोगिता है जो विद्यालय स्तर से अखिल भारतीय स्तर तक होगी।
- किशोर एवं तरूण वर्ग की तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता अखिल भारतीय स्तर तक होगी।
- क्षेत्र स्तर पर सभी वर्गों की प्रतियोगिता में प्रान्त स्तर के प्रथम प्रतिभागी भाग लेंगे।

संस्कृति महोत्सव 2022

प्रतियोगिता के समूह निम्नानुसार रहेंगे :–

समूह 'क' 1. व्यक्तिगत गीत (हिन्दी)
2. निबंध 3. रंगोली

समूह 'ख' 1. चित्रकला 2. गीता पाठ
3. एकल भजन

समूह 'ग' 1. प्रश्नमंच
2. कथा कथन अ.भा. स्तर तक शिशु एवं बाल वर्ग
3. तात्कालिक भाषण अ.भा. स्तर तक किशोर व तरूण वर्ग
4. अ.भा.पत्रवाचन आचार्य–दीदी

समूह 'घ' 1. तबला वादन 2. शास्त्रीय गायन
3. शास्त्रीय नृत्य 4. एकल अभिनय
5. मानस प्रथमाक्षरी

समूह 'ङ' 1. स्वरचित कवितापाठ 2. वन्देमातरम्

समूह 'ग' अखिल भारतीय स्तर तक रहेगा। समूह 'क','ख' तथा 'घ' क्षेत्र तक रहेगा एवं समूह 'ङ' की प्रतियोगिताएँ प्रांत तक रहेगी।

प्रश्नमंच एवं संस्कृति महोत्सव के नियम :–

01. प्रतियोगिता संबंधी जो नियम दिए गए हैं, उनमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन न करें।

02. संस्कृति महोत्सव / विज्ञान मेला / वैदिक गणित इन प्रतियोगिताओं में से किसी एक समूह की प्रतियोगिता में एक ही प्रतिभागी भाग ले सकता है।

03. समूह 'क', समूह 'ख', समूह 'ग', समूह 'घ' व समूह 'ङ' में उल्लेखित प्रतियोगिताओं में से प्रतिभागी किसी भी एक ही प्रतियोगिता में भाग ले सकेगा।

04. जिले से क्षेत्र स्तर तक केवल प्रथम स्थान प्राप्त प्रतिभागी ही भाग लेंगे। आचार्य पत्रवाचन में केवल विजेता प्रतिभागी ही भाग लेगा।

05. समापन समारोह के पूर्व किसी भी प्रतिभागी को समारोह स्थल छोड़ने की अनुमति नहीं होगी।

06. संस्कृति महोत्सव में इस सत्र में सभी प्रतियोगिताओं में चारों वर्ग रहेगें। शिशु वर्ग, बाल वर्ग, किशोर वर्ग एवं तरूण वर्ग।

07. क्षेत्र में होने वाली प्रतियोगिता में ग्राम भारती के शिशु, बाल, किशोर एवं तरुण वर्ग के प्रतिभागी (प्रांतीय विजेता दल) सीधे भाग लेंगे।

समूह 'क'

01. व्यक्तिगत गीत :–

- गीत हिन्दी भाषा में ही होना चाहिए। क्षेत्रीय भाषा में गीत मान्य नहीं होगा।
- व्यक्तिगत गीत में प्रस्तावना एवं आलाप का उपयोग न करें।
- गीत में न्यूनतम दो चरण और अधिकतम तीन चरण होने चाहिए।
- वाद्य यंत्रों का प्रयोग वर्जित होगा।
- गीत राष्ट्रभक्ति परक एवं प्रेरणा देने वाला होना चाहिए।

02. निबन्ध प्रतियोगिता :–

इसकी समय सीमा अधिकतम 60 मिनट होगी। प्रत्येक वर्ग को निम्नांकित विषयों में से किसीएक विषय पर निबन्ध लिखना होगा, जिसे प्रतियोगिता स्थल पर ही निर्णायक द्वारा चिट (पर्ची) उठाकर वर्गशः विषय निश्चित किया जाएगा तथा श्यामपट्ट पर उसे लिखा जाएगा। सभी प्रतियोगियों को निर्णायक द्वारा पर्ची के आधार पर सुनिश्चित किए गए एक विषय पर निबंध लिखना होगा।

निबन्ध के विषय –

शिशु वर्ग : 01. तुलसी का पौधा | 02. मानवता का त्रास हरे हम | 03. चन्द्रशेखर आजाद | 04. मेरी दादी | 05. गो माता | 06. महारानी लक्ष्मीबाई

बाल वर्ग : 01. क्रांतिवीर टंट्या मामा | 02. मेरी मातृभाषा मेरा गौरव | 03. जल है तो कल है | 04. मेरी नानी | 05. हमारे दैनिक जीवन में स्वच्छता का महत्व

किशोर वर्ग: 01. संत नामदेव

02. वर्तमान शताब्दी में भारत की प्रमुख वैज्ञानिक उपलब्धियाँ

03. स्वाधीनता का अमृत महोत्सव
04. सर्वे भवन्तु सुखिनः

05. जग सिरमौर बनाये भारत
06. मानव सेवा माधव सेवा

तरूण वर्ग : 01. डॉ. विक्रम साराभाई का भारत के वैज्ञानिक विकास में योगदान

02. जैन संत आचार्य, तुलसी
03. भारत की बढ़ती वैश्विक ख्याति

04. भविष्य का भारत
05. ग्रीन ऊर्जा स्रोत

06. रोजगार मूलक कृषि

03. रंगोली प्रतियोगिता :–

- रंगोली प्रतियोगिता के लिए 2X2 फिट का स्थान चारों ओर नियत रहेगा, जिस पर क्रम संख्या अंकित रहेगी।
- रंगोली बनाने की समय सीमा अधिकतम 60 मिनट रहेगी।
- प्रतिभागी को रंगोली बनाने के लिए स्थान व क्रमांक का निर्धारण स्वयं पर्ची उठाकर करना होगा।
- प्रतिभागी चॉक/पेंसिल से रेखांकन न करें और न ही किसी उपकरण का उपयोग करें।
- रंगोली में काले रंग का उपयोग नहीं करें।
- रंगोली में देवी–देवता अथवा महापुरुषों के चित्र न हों।
- रंगोली में रंगो के अतिरिक्त अन्य सामग्री का उपयोग वर्जित रहेगा।

रंगोली के विषय

- रंगोली एक प्राचीन पारम्परिक कला है जो गृह सज्जा, द्वार सज्जा एवं देव पूजा में प्रयोग की जाती है अतः यह अल्पना, चौक पूरना के रूप में ही बनाई जाए। इसमें विभिन्न सांस्कृतिक चिह्नों का साज–सज्जा के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

समूह 'ख'

01. चित्रकला :

शिशु वर्ग

- पेंसिल एवं मोम रंग से स्वयं के चुने हुए विषय पर चित्र बनाना है।

बाल वर्ग

- जल रंग से – स्वामी विवेकानंद/लोकमान्य तिलक/सरदार बल्लभ भाई पटेल में से किसी एक का चित्र बनाना है।
- चित्र का निर्णय निर्णायक द्वारा पर्ची उठाकर किया जाएगा।

- चित्र की आकृति विद्या भारती कुरुक्षेत्र द्वारा प्रकाशित चित्रमाला पर आधारित होनी चाहिए।
- प्रतियोगिता स्थल पर चित्र प्रतिभागियों के सम्मुख रखा जाना चाहिए।

किशोर वर्ग

- निम्नांकित में से किसी एक विषय पर जलरंग से चित्र बनाना है।
- निम्नांकित विषयों में से विषय का चयन निर्णायक द्वारा पर्ची उठाकर किया जाएगाः–

  01. रामसेतु 02. स्वच्छता अभियान 03. दीपावली

तरूण वर्ग

- निम्नांकित विषयों में से विषय का चयन निर्णायक द्वारा चिट उठाकर किया जाएगाः–

  01. सीमा के प्रहरी 02. शबरी के राम 03. माखन चोर नन्द किशोर

आलोक :–

- शिशु तथा बाल वर्ग को ड्राइंग शीट का चौथाई भाग (11''ग14''), किशोर एवं तरुण वर्ग को आधा भाग (14''ग 22'') दिया जाएगा।
- सभी वर्गों में समय सीमा अधिकतम 60 मिनिट रहेगी।
- सभी वर्गों में स्केच पेन का उपयोग वर्जित रहेगा।

02. गीता पाठ :–

- प्रतिभागियों को निम्नलिखित वर्गानुसार गीता के अध्याय को कण्ठस्थ करना होगाः–

  शिशु वर्ग – चतुर्दश अध्याय (संपूर्ण अध्याय)
  बाल वर्ग – पंचदश अध्याय (संपूर्ण अध्याय)
  किशोर वर्ग – षोडसो अध्याय (संपूर्ण अध्याय)
  तरूण वर्ग – सप्तदशो अध्याय (संपूर्ण अध्याय)

- निर्णायक कहीं से भी पाँच श्लोक सुनेंगे।
- श्लोक का चयन प्रतिभागी पर्ची उठाकर स्वयं करेंगे।
- चिट पर श्लोक संख्या अंकित रहेगी तथा प्रारम्भ करने के लिए पर्ची पर प्रथम श्लोक का प्रथम शब्द अंकित होगा।
- बाल वर्ग के प्रतिभागी को उसके द्वारा बोले गए किसी एक श्लोक का भावार्थ स्पष्ट करना होगा।
- किशोर एवं तरूण वर्ग के प्रतिभागी को उसके द्वारा बोले गए पाँच श्लोकों में से किसी एक श्लोक को शुद्ध लिखना एवं भावार्थ स्पष्ट करना होगा।

03. तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता :–

किशोर वर्ग – समय सीमा 8 मिनट

विषय – (1) युद्ध के परिणाम (2) समान नागरिक आचरण संहिता

(3) मेरे सपनों का भारत (4) विश्व पटल पर भारतीय नेतृत्व

तरूण वर्ग – समय सीमा 8 मिनट

विषय – (1) संस्कारित युवा राष्ट्र का गौरव (2) अभिव्यक्ति की आजादी का दुरूपयोग

(3) भारतीय सेना का पराक्रम (4) विनय न मानत जलधि जड़ .....।

तात्कालिक भाषण (अ.भा. स्तर पर) में किशोर एवं तरूण के प्रतिभागियों को सम–सामयिक विषय पर बोलना होगा। नियमावलि में दिए गए विषय क्षेत्र स्तर तक ही रहेगें।

मूल्यांकन बिन्दू एवं अंक विभाजन :–

समूह 'क' 1. व्यक्तिगत गीत – 50 अंक

बिन्दु :	स्वर	उच्चरण शुद्धता	लय–ताल	प्रस्तुतिकरण	श्रोताओं पर प्रभाव	योग
अंक	10	10	10	10	10	50

2. निबन्ध प्रतियोगिता – 50 अंक

बिन्दु :	बिषय वस्तु	मौलिक सोच	सुलेख एवं शुद्ध लेखन	भाषा शैली	प्रभाव	योग
अंक	10	10	10	10	10	50

3. रंगोली प्रतियोगिता – 50 अंक

बिन्दु :	रूपांकन	रंग संयोजन	कला पक्ष परंपरा	विषय वस्तु	प्रभाव	योग
अंक	10	10	10	10	10	50

समूह 'ख' 1. चित्रकला प्रतियोगिता – 50 अंक

बिन्दु :	रूपांकन	रंग संयोजन	कला पक्ष रूढ़ि/परंपरा	विषय वस्तु	प्रभाव	योग
अंक	10	10	10	10	10	50

2. (क) गीता पाठ (शिशु वर्ग) – 50 अंक

बिन्दु :	पाठ की शुद्धता	कंठस्थीकरण शुद्धता	लय	प्रस्तुतिकरण	श्रोताओं पर प्रभाव	योग
अंक	10	10	10	10	10	50

3. (ख) गीता पाठ (बाल, किशोर एवं तरुण वर्ग) – 50 अंक

बिन्दु :	पाठ की शुद्धता	भाव/लेखन शुद्धता	लय	प्रस्तुतिकरण	श्रोताओं पर प्रभाव	योग
अंक	10	10	10	10	10	50

एकल भजन :–

01. भजन केवल हिन्दी भाषा में ही मान्य होगा। वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जा सकता है।
02. भजन फिल्मी पेरोडी के आधार पर न हो।
03. समय 4 मिनट रहेगा।

मूल्यांकन बिंदु व अंक विभाजन : एकल भजन :–

बिन्दु	भाव	लय	प्रभाव	योग
अंक	20	20	10	50

समूह 'ग'

4. तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता – 50 अंक

बिन्दु	विषय सामग्री	तथ्य	समय–सीमा का पालन	प्रस्तुति एवं उच्चारण शुद्धता	भाषा–शैली	योग
अंक	15	10	05	15	05	50

प्रश्न मंच प्रतियोगिता

- इस संबंध में विद्या भारती 'संस्कृति बोध परियोजना' में दी गई नियमावली एवं विवरणिका का अवलोकन करें। उसमें दिए गए विवरणानुसार सभी नियम यथावत रहेंगे।
- प्रश्नमंच में सभी पुस्तकें नवीनतम संस्करण की ही मान्य होंगी। पुस्तकों में संशोधन/परिवर्तन होता रहता है।
- प्रश्नमंच प्रतियोगिता निष्पक्ष रूप से सम्पन्न हो इस दृष्टि से इस व्यवस्था को और अधिक पारदर्शी बनाने के लिए प्रश्न संच निर्माण की विधि इस वर्ष निम्नानुसार रहेगी :–

(1) कक्षा स्तर पर –

- प्रत्येक कक्षा में तीन–तीन प्रतिभागियों के मान से जितने दल बन सकें, उतने दल बनाकर प्रश्न मंच सम्पन्न कराना है। सभी भैया–बहिन प्रतिभागी बनें ऐसा प्रयास करें।
- प्रश्न निर्माणकर्ता तथा प्राश्निक कक्षाचार्य न रहें।
- वर्ग एवं कक्षा स्तर पर वर्ग एवं कक्षा बदलकर प्रश्नों का निर्माण कराया जाए।

  यथा – शिशु वर्ग में कक्षा 4 के लिए कक्षा 5 के आचार्य द्वारा तथा कक्षा 5 में कक्षा 4 के आचार्य द्वारा प्रश्न का निर्माण किया जाए तथा सभी प्रश्नों को एक सील बंद लिफाफे में रखकर प्रतियोगिता स्थल पर ही खोला जाए। यही प्रक्रिया बाल, किशोर एवं तरुण वर्ग के लिए अपनाई जाए।

(2) विद्यालय स्तर पर –

- कक्षा स्तर पर विजेता दल विद्यालय स्तर के प्रश्न मंच में सहभागी होगा।
- इस प्रश्नमंच कार्यक्रम को समारोहपूर्वक आयोजित करें।
- प्रश्न निर्माण एवं प्राश्निक के रूप में नगर से किसी योग्य व्यक्ति का चयन करें, उन्हें प्रश्न मंच की नियमावली से भली–भाँति अवगल कराएँ।

(3) जिला स्तर पर –

- जिला स्तर पर प्रश्न संच जिला समन्वयक/विभाग समन्वयक उपलब्ध कराएँगें।
- अपने विभाग के जिलों से ही प्रश्न संच तैयार कराकर विभाग में ही जिला बदल कर प्रश्न संच भेजे जाएंगे।
- प्रश्नों के लिफाफे व्यवस्थित रूप से बंद रहेंगे, जिन्हें प्रतियोगिता स्थल पर सभी के समक्ष खोला जाए।

(4) विभाग स्तर पर –

- विभाग स्तर पर प्रांत के सभी विभागों से प्रश्न बुलाए जाएँगे इसकी व्यवस्था संस्कृति बोध परियोजना के प्रांत प्रमुख देखेंगे तथा सभी विभागों से प्रश्न संच बुलाकर विभाग बदलकर प्रश्न संच भेजेंगे। लिफाफे प्रतियोगिता स्थल पर सभी के सम्मुख खोले जाएँगे।

(5) प्रान्त स्तर पर –

- प्रान्त स्तर पर प्रश्न संच की व्यवस्था प्रांत संयोजक करेंगे।

(6) क्षेत्र स्तर पर –

- क्षेत्र स्तर पर प्रश्न संच की व्यवस्था क्षेत्र संयोजक करेंगे। प्रांत एवं क्षेत्र स्तर पर प्रश्नमंच प्रतियोगिता प्रोजेक्टर पर संपन्न होगी। प्रोजेक्टर की व्यवस्था प्रांत में प्रांत संयोजक और क्षेत्र में क्षेत्र संयोजक करेंगे।

प्रश्न निर्माण संबंधी निर्देश :–

01. प्राश्निक प्रश्न तैयार करते समय विद्या भारती विवरणिका के नियमों का पालन करें।
02. प्रश्न मंच में व्याख्यात्मक तथा विश्लेषणात्मक प्रश्नों के लिए कोई स्थान नहीं हैं क्योकि ऐसे प्रश्नों के उत्तर प्रायः लम्बे होते हैं। प्रश्न ऐसे हों जिनका उत्तर संक्षिप्त अर्थात एक शब्द, वाक्यांश में हो।
03. प्रश्न तथ्यों पर आधारित होंगे। ये प्रश्न किसी एक तथ्य पर अथवा दो या दो से अधिक तथ्यों के पारस्परिक सम्बन्ध पर आधारित हो सकेते हैं, ताकि वे जिज्ञासा मूलक, चिंतन प्रेरक तथा संस्कार बोधक हो सकें।
04. वस्तुनिष्ठ प्रश्न, अनेक दिए गए उत्तरों में से सही उत्तर छाँटने वाले, तुलनात्मक अथवा अन्य किसी प्रकार के भी हो सकते हैं।
05. प्रश्न, पुस्तक में दी गई भाषा व शैली के अनुसार होना आवश्यक नहीं है। सामग्री को आधार मानकर प्रश्नों की भाषा व शैली विविध प्रकार की हो सकती है।
06. प्रश्नों का किसी एक भाग में दी गई सामग्री पर आधारित होना अवश्यक नहीं है। एक प्रश्न में ही पाठ्यक्रम में अलग–अलग स्थानों पर दी गई सामग्री का भी समावेश हो सकता है।
07. प्रश्न सटीक हों तथा पुस्तक में उनमें से एक से अधिक उत्तर प्राप्त न हो, परन्तु यदि पुस्तक में एक से अधिक उत्तर प्राप्त हों तो प्रश्न निरस्त कर नया प्रश्न दिया जावे।
08. प्रश्न की भाषा यथा सम्भव सरल, सुबोध तथा स्पष्ट होगी। प्रश्न का एक ही अर्थ निकलना चाहिए।
09. प्रश्नों तथा उत्तरों का आकार यथा सम्भव छोटा रहेगा।
10. प्रश्नों के एक चक्र में लगभग एक ही स्तर के प्रश्न होना अपेक्षित है। उत्तरोत्तर चक्रों का स्तर क्रमशः ऊंचा होना अपेक्षित है। अतः प्रत्येक पुस्तक से कम से कम एक चक्र (One Round) अवश्य रहे।

प्रश्न मंच सत्र 2022–23 में प्रश्नों के निम्नलिखित प्रकार हो सकते हैं :–

01. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

यथा – भगवान महावीर का जन्म .... राज्य में हुआ था।

उत्तर – बिहार

02. विकल्प छाँटकर उत्तर दीजिए –

यथा – श्रीराम का जन्म स्थान इनमें से कौन–सा है ?

(1) काशी (2) अयोध्या (3) मथुरा (4) हरिद्वार

उत्तर – अयोध्या

03. सही/गलत बतायें –

यथा – ओड़िसा की राजधानी कंकटकानगर है।

उत्तर – गलत (सही उत्तर भुवनेश्वर) गलत उत्तर होने पर सही उत्तर बतायें।

04. सही तिथि/दिनांक एवं वर्ष बताये ?

05. इनके माता/पिता/गुरू/शिष्य एवं पति/पत्नि का नाम बतायें ?

06. कविता के श्लोक की पंक्ति पूर्ण करें ?

07. इनके उत्तर एक शब्द में दीजिए।

प्रश्नोत्तर विधि :–

01. प्रश्न तैयार करने वाले प्राश्निक प्रश्न नहीं पूछेंगे, अपितु इसकी व्यवस्था विद्यालय के आचार्यों का छोड़कर नगर के विद्वतजनों में से की जाएगी।

02. प्रतिभागियों की बैठक व्यवस्था पर्ची डालकर की जाए। प्रश्नकर्ता पहला प्रश्न पहले दल से, दूसरा प्रश्न दूसरे दल से, तीसरा प्रश्न तीसरे दल से क्रमशः पूछना प्रारंभ करेंगे। कहने का आशय यह है कि प्रत्येक दौर में नए दल से प्रश्न पूछा जाए। पुनः 6 प्रश्नों तक यही क्रम दोहराया जाए। किसी भी दल से लगातार प्रश्न न पूछा जाए।

03. इस प्रकार सभी पुस्तकों से प्रश्न पूछने को एक चक्र कहा जाएगा। 6 प्रश्नों में यदि निर्णय नहीं होता है, तो समान अंक पाने वाले दलों से दूसरे चक्र में पाँच प्रश्न पूछे जाएँगें। दूसरे चक्र में निर्णय न होने पर तीसरे, चौथे चक्र में तीन–तीन प्रश्न होंगे। पाँचवे चक्र में एक–एक प्रश्न पूछकर परिणाम निकाला जाएगा।

04. प्रतिभागी दलों को प्राप्त होने वाले अंकों का लेखन सामने रखे गए श्यामपट्ट पर किया जाएगा। एक गणक कागज पर भी अंक तालिका की पूर्ति करेंगे।

05. प्रश्न एक ही बार बोला जाएगा।

06. प्रश्न का उत्तर देने के लिए 25 सेकेण्ड का समय रहेगा। समय गणना पूरा प्रश्न पूछे जाने के तुरन्त बाद आरम्भ होगी। 20 सेकेण्ड बीतने पर चेतावनी की घण्टी बजेगी, 25 सेकेण्ड का समय बीतने पर दो घण्टी बजाकर समय पूरा होने की सूचना दी जाएगी।

07. पुस्तक में लिखा उत्तर ही सही उत्तर माना जाएगा। यह उत्तर पुस्तक में दी गई सामग्री पर ही आधारित होगा और वही सही उत्तर माना जाएगा। उत्तर देने में तीनों प्रतिभागी आपस में परामर्श कर सकेंगे। तीनों में से किसी एक के द्वारा दिया गया उत्तर स्वीकार किया जाएगा। प्रथम दिया गया उत्तर ही अन्तिम उत्तर होगा।

08. अस्पष्ट, अधूरे, गलत अथवा कोई उत्तर न दिए जाने की दशा में प्रतिभागी टीम को शून्य अंक मिलेगा। पूरा, सही और समय पर दिए गए उत्तर का पूरा अंक प्रतिभागी टीम को मिलेगा।

09. उच्चारण में भिन्नता होगी यद्यपि उत्तर की शुद्धता अनिवार्य है। उत्तर के सही या गलत होने की घोषणा भी प्राश्निक उच्च स्वर में करेंगे। उसी के अनुसार प्रतिभागी टीमों के अंकों की गणना सामने रखे गए श्यामपट्ट पर सही व गलत चिह्नों द्वारा दर्शाई जाएगी।

10. उत्तर के सही, पूर्ण तथा समय सीमा में दिए जाने का निर्णय प्राश्निक महोदय प्रश्न कार्ड में दिए गए उत्तर के आधार पर करेंगे। इस विषय में प्राश्निक महोदय का निर्णय मान्य होगा, परन्तु किसी सम्भ्रम की स्थिति में निर्णायक महोदय का निर्णय सर्वमान्य होगा।

प्रश्नों की संख्या एवं अंक विभाजन –

01. प्रतियोगिता में प्रश्नों का एक चक्र होगा। आवश्यकता पड़ने पर प्रश्नों का दूसरा, तीसरा अथवा चौथा चक्र भी हो सकेगा। प्रथम चक्र में 6 प्रश्न होंगे।

02. प्रत्येक चक्र में प्रश्नों की एक श्रृँखला होगी। प्रत्येक श्रृँखला में समान स्तर के उतने की प्रश्न होंगे जितनी कि प्रतिभागी प्रदेश समितियाँ रहेंगी। इस प्रकार प्रश्न कार्डों की कुल संख्या प्रतिभागी समिति की संख्या के बारह गुणा के बराबर होगी।

03. प्रश्न तथा उनके उत्तर कार्डों को मिलाकर उनकी क्रम संख्या निर्धारित करके उन्हें बांधकर रखा जाएगा।

शिशु वर्ग (कक्षा चतुर्थी व पंचमी)

क्रमांक	**पुस्तक का नाम**	**चक्रानुसार प्रश्न संख्या**				
		प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम
1.	संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रश्नोत्तरी कक्षा 4 (2020–21)	3	1	–	1	–
2.	संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रश्नोत्तरी कक्षा 5 (2020–21)	3	1	1	–	–
3.	हमारे राष्ट्र निर्माता भाग – 1 प्रथम 15 पाठ (एकादश संस्करण 2017)	3	2	1	1	–
4.	प्रेरणा दीप भाग – 1 (षष्ठम् संस्करण 2015)	3	1	1	1	–
	योग	**12**	**5**	**3**		–

बाल वर्ग (कक्षा षष्ठी से अष्टमी तक)

क्रमांक	पुस्तक का नाम	चक्रानुसार प्रश्न संख्या				
		प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम
1.	संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रश्नोत्तरी कक्षा 6 (2020–21)	2	1	–	–	–
2.	संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रश्नोत्तरी कक्षा 7 (2020–21)	2	1	–	–	–
3.	संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रश्नोत्तरी कक्षा 8 (2020–21)	2	1	–	–	–
4.	व्यवहारिक खगोल परिचय प्रथम 6 पाठ (सप्तम् संस्करण 2015)	2	1	1	1	–
5.	प्रेरणा दीप भाग – 2 (षष्ठम् संस्करण 2015)	2	1	1	1	–
6.	हमारे राष्ट्र निर्माता भाग – 1 पाठ 16 से 32 तक पाठ (एकादश संस्करण 2017)	2	–	1	1	–
	योग	**12**	**5**	**3**	**3**	–

किशोर वर्ग (कक्षा नवमी से दशमी तक)

क्रमांक	पुस्तक का नाम	चक्रानुसार प्रश्न संख्या				
		प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम
1.	संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रश्नोत्तरी कक्षा 9 (2020–21)	2	1	–	–	–
2.	संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रश्नोत्तरी कक्षा 10 (2020–21)	2	1	–	–	–
3.	व्यवहारिक खगोल परिचय (सप्तम् संस्करण 2015)	2	1	1	–	–
4.	प्रेरणा दीप भाग – 3 (पंचम संस्करण 2014)	2	1	1	1	–
5.	हमारे राष्ट्र निर्माता भाग – 2 पाठ 1 से 25 तक (अष्टम संस्करण 2013)	2	1	1	1	–
6.	सामाजिक समरसता और हमारे संत 2014	2	–	–	1	–
	योग	**12**	**5**	**3**	**3**	–

तरुण वर्ग (कक्षा एकादशी से द्वादशी)

क्रमांक	पुस्तक का नाम	चक्रानुसार प्रश्न संख्या				
		प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम
1.	संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रश्नोत्तरी कक्षा 11 (2020–21)	2	1	–	–	–
2.	संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रश्नोत्तरी कक्षा 12 (2020–21)	2	1	–	–	–
3.	व्यवहारिक खगोल परिचय (सप्तम् संस्करण 2015)	2	1	1	–	–
4.	प्रेरणा दीप भाग – 4 (तृतीय संस्करण 2017)	2	1	1	1	–
5.	हमारे राष्ट्र निर्माता भाग – 2 पाठ 26 से 41 तक (अष्टम संस्करण 2013)	2	1	1	1	–
6.	सामाजिक समरसता और हमारे संत 2014	2	–	–	1	–
	योग	**12**	**5**	**3**	**3**	–

प्रारूप – प्रश्न चक्र संख्या – वर्ग :– ....

क्र.	नाम	विद्यालय	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	योग

अखिल भारतीय आचार्य पत्रवाचन

विषय : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन में हमारी भूमिका।

नियम –

01. इस कार्यक्रम में प्रत्येक क्षेत्र से एक आचार्य उपरोक्त विषय पर दृश्य–श्रव्य माध्यमों का प्रयोग करते हुए अपना पत्र वाचन करेंगे। यह भाषण प्रतियोगिता नहीं है अतः लिखकर लाए पत्र को पढ़ना ही होगा।
02. समय सीमा 7 से 10 मिनट
03. माध्यम हिन्दी अथवा अंग्रेजी

04. मूल्यांकन –	क.	तथ्य संग्रह एवं विषय सामग्री	– 10 अंक
	ख.	पी.पी.टी. का प्रयोग एवं पत्र से समन्वय	– 10 अंक
	ग.	अभिव्यक्ति तथा उच्चारण शुद्धि	– 10 अंक
	घ.	प्रस्तुति एवं सन्दर्भ	– 10 अंक
	ङ	प्रश्नोत्तर एवं समय सीमा	– 10 अंक
		कुल –	**50 अंक**

05. अपने पत्र वाचन की लिखित एवं चित्रमय सामग्री देना आवश्यक होगा।
06. पी.पी.टी. में प्रयोग किए जाने वाले Text का font & Unicode लाना अनिवार्य है।
07. विडियों क्लीप, मॉडल, शार्ट सहित सभी दृश्य एवं श्रव्य सामग्री का प्रस्तुतिकरण P.P.T. के द्वारा ही करना अनिवार्य है। इसके अभाव में पत्र अमान्य हो जावेगा।
08. P.P.T. के अतिरिक्त कोई चार्ट, फ्लैश कार्ड, मॉडल इत्यादि के प्रर्दशन की अनुमति नहीं है।
09. निर्णायकों को अपने पत्र की 3 प्रति देना अनिवार्य होगा।
10. यह पत्र वाचन है अभिनय, नृत्य या भाषण प्रतियोगिता नहीं। पत्र पढ़ें सिर्फ अपने पत्र से अपने दृश्य सामग्री P.P.T. को इंगित करें।
11. तीनों निर्णायक अपने व्यक्तिगत अंक देंगे। तीनों के अंक जोड़कर औसत के आधार पर परिणाम घोषित किए जावेंगे।

कथा–कथन प्रतियोगिता

(शिशु एवं बाल वर्ग के भैया–बहिनों के लिए)

संस्कृति बोध परियोजना के आयाम में कथा–कथन के नाम से भैया–बहिनों में वर्णन शैली का विकास करने की दृष्टि से जोड़ी गई है। यह प्रतियोगिता विद्यालय स्तर से जिला, विभाग, प्रांत, क्षेत्र एवं अखिल भारतीय सभी स्तरों पर लागू होगी।

नियम –

01. कथा–कथन प्रतियोगिता के वर्ग –

(क) शिशु वर्ग – कक्षा 4–5 (ख) बाल वर्ग – कक्षा 6–7–8

उपरोक्त दोनों वर्गों में केवल निर्धारित कक्षाओं के भैया–बहिन ही भाग ले सकेंगे।

02. इस प्रतियोगिता में शिशु एवं बाल वर्ग में क्षेत्रीय स्तर पर प्रथम आने वाले भैया–बहिन अखिल भारतीय संस्कृति महोत्सव में अपने वर्ग के लिए निर्धारित विषय पर कथा–कथन कहेंगे। कथा–कथन के विषय निम्नलिखित है –

वर्ग	विषय
शिशु	ऐतिहासिक घटना, पौराणिक आख्यान या प्रेरणादायी घटना पर आधारित कथा–कथन
बाल	ऐतिहासिक घटना, पौराणिक आख्यान या प्रेरणादायी घटना पर आधारित कथा–कथन

03. कथा–कथन हेतु समय सीमा – 5 से 7 मिनट दोनों वर्ग हेतु

04. कथा–कथन की विषय सामग्री के आलेख की 3 प्रतियाँ निर्णायकों के लिए तैयार करके लावें ताकि प्रस्तुति के समय उन्हें दी जा सके।

05. यह कथा–कथन प्रतियोगिता है। अतः इसमें भाव मुद्रा कथा–कथन के अनुरूप होना चाहिए।

06. कथा–कथन का मूल्यांकन –

क.	विषय सामग्री	– 15 अंक
ख.	तथ्य	– 10 अंक
ग.	प्रस्तुति एवं उच्चारण शुद्धता	– 15 अंक
घ.	भाषा शैली	– 05 अंक
ङ	समय सीमा पालन	– 05 अंक
	कुल –	**50 अंक**

07. माध्यम – हिन्दी अथवा अंग्रेजी

08. तीनों निर्णायक अंक पत्रों पर व्यक्तिगत रूप से अंक देंगे। तीनों निर्णायकों के अंक जोड़कर औसत आधार पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय घोषित किए जावेगें।

दृष्टव्य –

– अखिल भारतीय स्तर पर क्षेत्र में वर्गानुसार प्रथम स्थान प्राप्त विजेता ही भाग लेंगे।

– निर्णायकों को व्यवस्थापक नियम से परिचित कराएंगे।

– निर्णायकों का निर्णय सर्वमान्य एवं अंतिम होगा।

तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता अ.भा. स्तर के लिए

(किशोर एवं तरूण वर्ग के भैया–बहिनों के लिए)

संस्कृति बोध परियोजना के आयाम में तात्कालिक भाषण के नाम से चिन्तन की प्रतिभा तथा भाषण कला में निपुणता लाने की दृष्टि से जौड़ी गई है। यह प्रतियोगिता अखिल भारतीय स्तर तक होगी।

नियम –

01. तात्कालिक भाषण 2 वर्गों में आयोजित किया जावेगा –

(क) किशोर वर्ग – कक्षा 9 – 10(ख) तरूण वर्ग – कक्षा 11 – 12

उपरोक्त 2 वर्गों में केवल निर्धारित कक्षाओं के छात्र भैया–बहिन ही भाग ले सकेंगे

02. इस प्रतियोगिता में किशोर एवं तरूण इन दोनों वर्गों में विभिन्न सम–सामयिक विषय (Current Affairs) पर उठाई गई पर्ची के आधार पर किसी एक विषय पर तात्कालिक भाषण देना होगा। तैयारी के लिए केवल 3 मिनट का समय दिया जाएगा।

03. समय सीमा – 6 से 8 मिनट दोनों वर्गों हेतु

04. मूल्यांकन –

क.	विषय सामग्री	– 15 अंक
ख.	तथ्य	– 10 अंक
ग.	प्रस्तुति एवं उच्चारण शुद्धता	– 15 अंक
घ.	भाषा शैली	– 05 अंक
ङ	समय सीमा पालन	– 05 अंक
	कुल	**– 50 अंक**

05. माध्यम – हिन्दी अथवा अंग्रेजी

06. तीनों निर्णायक अंक पत्रों पर व्यक्तिगत रूप से अंक देंगे। तीनों निर्णायकों के अंक जोड़कर औसत के आधार पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय परिणाम घोषित किए जावेंगे।

दृष्टव्य –

– अखिल भारतीय स्तर पर क्षेत्र में वर्गानुसार प्रथम स्थान प्राप्त विजेता ही भाग लेंगे।

– निर्णायकों को व्यवस्थापक नियम से परिचित कराएंगे।

– निर्णायकों का निर्णय सर्वमान्य एवं अंतिम होगा।

विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों की सूची का प्रारूप

क्र.	प्रतियोगिता	नाम	पिता	कक्षा	विद्यालय	जिला	प्रांत	परिणाम

समूह 'घ'

(क) शास्त्रीय गायन

- गायन ख्याल पद्धति पर होगा।
- अधिकतम दो संगत कलाकार साथ ला सकते हैं।
- इलेक्ट्रानिक तानपुरा प्रयोग किया जा सकता है। हारमोनियम का प्रयोग तानपुरा के स्थान पर सिर्फ स्वर देने के लिए कर सकते हैं।

(ख) शास्त्रीय नृत्य (कथक)

- ध्वनि मुद्रिका (कैसेट) का प्रयोग वर्जित है।
- अधिकतम तीन संगत कलाकार साथ ला सकते हैं।

(ग) तबला वादन

- समय सीमा 10 मिनट रहेगी।
- एक संगत कलाकार लहरे/नगमा के लिए साथ ला सकते हैं।

आलोक –

01.उपरोक्त प्रत्येक प्रतियोगिता में समय सीमा 10 मिनट रहेगी।

02. संगत कलाकार किसी भी आयु के हो सकते हैं।

03. संगत कलाकारों का प्रतियोगिता शुल्क देय होगा।

04. संगत कलाकारों को किसी भी प्रकार का प्रमाण–पत्र या पुरस्कार नहीं दिया जाएगा।

(घ) एकल अभिनय

- समय सीमा 5 मिनट रहेगी।
- संवाद या पार्श्व संगीत के लिए किसी संगत कलाकार या टेप रिकार्डर का उपयोग वर्जित है।
- एकल अभिनय में सांस्कृतिक मर्यादा का ध्यान रखें (अश्लील एवं शराबी आदि का अभिनय वर्जित है।)

(ङ) मानस प्रथमाक्षरी प्रतियोगिता :–

- प्रत्येक दल में तीन भैया/बहिन रहेंगे।
- प्रत्येक वर्ग में एक दल ही भाग ले सकेगा।
- प्रतियोगिता में रामचरित मानस ही निर्णय में आधार मानी जाएगी एवं निर्णायक के पास रहेगी।
- प्रथम दल संचालक द्वारा दिए गए प्रथमाक्षर के आधार पर ही होगी। एक चक्र में एक अक्षर से शुरू होने वाली चौपाई, दोहा, छन्द, सौरठा रहेंगे।

- एक प्रतिभागी द्वारा कही गई रचना उसी वर्ग के किसी दल द्वारा किसी भी चक्र में पुनः स्वीकार नहीं होगी।
- प्रथम दल को संचालक द्वारा दिए गए अक्षर से चौपाई, दोहा, छन्द या सौरठा गाना होगा।

  उदा. – सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुणगान।
  सादर सुनहिं ते तरहि भव सिंधु बिना जलजान।।
- प्रथम चक्र में प्रत्येक दल को 10 बार, द्वितीय चक्र में 5 बार, तृतीय चक्र में 3 बार एवं इसके बाद एक–एक बार, निर्णय होने तक अवसर प्राप्त होंगे।
- प्रथम चक्र में सभी दल एवं अगले चक्रों में केवल समान अंक वाले दल सम्मिलित होंगे।
- किसी दल द्वारा प्रस्तुति में असमर्थ रहने पर या गलत प्रस्तुति पर 30 सेकंड पश्चात् उसी अक्षर से अगल दल को तत्काल रचना प्रारंभ करना होगी।
- प्रत्येक सही प्रस्तुति हेतु एक अंक, गलत, अपूर्ण अथवा अशुद्ध प्रस्तुति को शून्य अंक मिलेगा।
- निर्णायक द्वारा ही अंतिम रूप से पाठ की शुद्धता का निर्णय दिया जाएगा जो सभी को मान्य होगा।
- चौपाई या दोहे में 'ष' जहाँ पर 'ख' के अर्थ में आया है वहाँ पर ख ही मान्य होगा।

मूल्यांकन बिंदु व अंक विभाजन –

शास्त्रीय गायन :–

बिन्दु	स्वर	ताल	राग	प्रस्तुति	प्रभाव	योग
अंक	10	10	10	10	10	50

शास्त्रीय नृत्य :–

बिन्दु	ताल	अभिनय	वेश	प्रस्तुति	प्रभाव	योग
अंक	10	10	10	10	10	50

तबला वादन :–

बिन्दु	ताल	लय	स्पष्टता	प्रस्तुति	प्रभाव	योग
अंक	10	10	10	10	10	50

तबला वादन :–

बिन्दु	अभिनय	वेश	विषय चयन व निर्वाह	प्रस्तुति	प्रभाव	योग
अंक	10	10	10 10	10		50

समूह 'ङ'

स्वरचित कविता :–

- प्रतियोगिता स्थल पर तीनों वर्गों को एक घंटे पूर्व एक–एक कविता पंक्ति अथवा शीर्षक दिया जाएगा जिन पर प्रतिभागियों को अपनी रचना लिखकर निर्धारित समय पर निर्णायकों के समक्ष प्रस्तुत कर उसका पाठ भी करना होगा।

वन्दे मातरम् गायन :–

01. प्रत्येक दल में कुल 3 भैया/बहिन होंगे। अपरिहार्य कारण पर ही दल में कम से कम दो प्रतिभागियों को शामिल किया जावेगा। वाद्य यंत्रों के प्रयोग की अनुमति नहीं होगी।
02. गीत की लय अर्चना भाग–4 नामक ध्वनि मुद्रिका सुनाने की व्यवस्था आयोजक विद्यालय द्वारा की जाए।

मूल्यांकन बिंदु व अंक विभाजन : स्वरचित कविता :–

बिन्दु	भावपक्ष	कलापक्ष	पठनशैली	योग
अंक	20	10	10	50

मूल्यांकन बिंदु व अंक विभाजन : वन्दे मातरम :–

बिन्दु	लय	शुद्धता	सांधिकता	प्रभाव	योग
अंक	20	10	10	10	50

प्रतियोगिता संबंधी व्यवस्थाएँ :–

01. व्यवस्था सम्बन्धी निर्देशों का पालन विद्यालय से लेकर क्षेत्रीय स्तर तक समान रहेगा।

02. प्रत्येक प्रतियोगिता के लिए अलग–अलग आचार्यों को स्वतंत्र रूप से दायित्व सौंपा जाए।

03. प्रतियोगिता प्रारंभ होने से 15 मिनट पूर्व निर्धारित कक्षा में उपस्थित होकर आचार्य गण निम्नांकित दायित्व सम्पन्न करेंगे :–

- श्यामपट्ट पर प्रतियोगिता का नाम, समय, दिनांक, वर्ग एवं कार्यक्रम की समयावधि अंकित करें।
- प्रतिभागियों को प्रवेश पत्र देकर प्रवेश दें तथा प्रतिभागियों की बैठक की वर्गशः व्यवस्था करें।
- प्रतियोगिता संबंधी नियम जिनका पत्रक में उल्लेख हैं, प्रतियोगिता प्रारंभ होने के पूर्व पढ़कर सुनाएँ।
- प्रतियोगिता में लगने वाली सामग्री का वितरण करें।
- चित्रकला तथा निबंध प्रतियोगिता की सामग्री तत्काल निर्णायकों को देवें।
- निर्णय की अधिकृत जानकारी प्राप्त कर तत्काल प्रमाण पत्र लेखक को सौंप दें।
- परिणाम की सूचना परिणाम पत्रक तैयार कर रहे आचार्य को निम्न शीर्षकों के अंतर्गत दें–

परिणाम का प्रारूप :–

वर्ग	प्रतियोगिता का नाम	प्रतियोगी का नाम	कक्षा	विद्यालय का नाम	प्रांत

प्रतिभागियों का नामांकन एवं सहभागिता :–

- परिसर में प्रवेश करते ही संरक्षक आचार्य/दीदी प्रतिभागी का नामांकन आयोजन स्थल पर कराएँ तथा निर्धारित शुल्क जमा कर पावती लें।
- नामांकन होते ही प्रवेशिका प्राप्त करें तथा उसे सदैव लगाए रखें।
- प्रतिभागी के परिचय पत्र फोटो सहित लाएँ। जिला स्तर से ही इस प्रकार का रिकार्ड तीन प्रतियों में तैयार करवा लिया जाए।

- समस्त प्रतिभागियों की सूची (परिणाम पत्रक में दिए गए शीर्षकों के आधार पर) तैयार करके कार्यालय में जमा कर दें।

आयोजन स्थल पर लगने वाली प्रदर्शनी :–

- प्रदर्शनी का आयोजन पृथक से पंडाल में विद्यालय, जिला, विभाग व प्रांत स्तर पर किया जाए।
- रंगमंच का निर्माण करते समय अपने सांस्कृतिक प्रतीक चिह्न पंडाल में अथवा मुख्य द्वार पर लगाए जाएँ अथवा उनकी अनुकृति बनाई जाए।
- संस्कृत भाषा, योग एवं वनवासी जीवन पर केन्द्रित प्रदर्शनी के अतिरिक्त निम्नलिखित प्रदर्शनी व स्टॉल लगाए जाएँ :–

स्वदेशी प्रदर्शनी

स्वदेशी वस्तुओं की सूची टांगे तथा वे किस स्थान से प्राप्त की जा सकती है, उसकी सूची भी दें ताकि दर्शकों को पूर्ण जानकारी मिल सके।

112 चित्रों की प्रदर्शनी

विद्या भारती, कुरुक्षेत्र द्वारा प्रकाशित 112 चित्रों की प्रदर्शनी लगाई जाए तथा चित्रों को शीर्षकों के अंतर्गत रखा जाए। यथा – महापुरुषों के चित्र, स्वतंत्रता आंदोलन के चित्र, वैज्ञानिकों के चित्र, धार्मिक महापुरुषों के चित्र आदि ताकि विषय वस्तु समझने में दर्शकों को कठिनाई न हो।

साहित्य स्टॉल

प्रेरणादायक पुस्तकों को विक्रय हेतु रखा जाए। इस सम्बन्ध में अर्चना प्रकाशन से भी सम्पर्क किया जा सकता है। साथ–साथ अपने धार्मिक ग्रंथ यथा – वेद, उपरिषद्, पुराण आदि की प्रदर्शनी भी लगाई जाए। वंदे मातरम्, संस्कृति, सरस्वती, संस्कृत संबंधी साहित्य अवश्य रखा जाए।

आलोक :– प्रत्येक प्रतिभागी को वंदना, एकात्मता स्तोत्र, प्रातः स्मरण, भोजन मंत्र एवं वार्षिक गीत (हिन्दी) याद करके आना है। इस वर्ष से प्रश्नमंच प्रतियोगिता में भी इस पर आधारित प्रश्न सम्मिलित किए गए हैं।

विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित
Organised By Vidya Bharti Sanskriti Sanskriti Shiksha Sansthan
अखिल भारतीय संस्कृति ज्ञान प्रश्नमंच
परिचय – पत्र

फोटो

वर्ग : शिशु / बाल / किशोर / तरुण ....

01. प्रतिभागी का नाम (Name Of Participant)....................................

02. पिता का नाम (Father's Name)...

03. जन्म तिथि (Date Of Birth in Figure)..

(शब्दों में)(In word)...

04. कक्षा (Class)..................विद्यालय में प्रवेश तिथि (Date Of Admission In school)..........

05. विद्यालय का सम्पूर्ण पता ....

....

....(Full Name and Address of the Institution)...

....

....

.... पिन (Pin) ....

दूरभाष (Phone Number) विद्यालय .... निवास ....

06. प्रतिभागी के हस्ताक्षर (Sign. Of Participant) ....

07. कक्षाचार्य के हस्ताक्षर (Sign. Of Class Teacher) ....

08. प्राचार्य के हस्ताक्षर (Principal's Sign. & Seal) ....

09. प्रान्तीय संस्कृति बोध परियोजना प्रमुख / मंत्री

(Sign. Of Prantiya S.B.P.Pramukh)

....

10. क्षेत्रीय संस्कृति बोध परियोजना प्रमुख के हस्ताक्षर

(Sign. Of Kshetriya S.B.P.Pramukh)

....

परिणाम – ....

संकुल / जिला / विभाग समारोह   प्रांतीय समारोह   क्षेत्रीय समारोह

हस्ताक्षर संयोजक (दिनांक सहित)

....

संकुल / जिला   विभाग   प्रान्त   क्षेत्र

विद्या भारती वार्षिक गीत (सत्र 2022–23)

राग–भूपाली पर आधारित

ताल–कहरवा

स्वतन्त्रता का अमृत उत्सव मिलकर सभी मनाऐं ।
भारत माता के चरणों में अपना शीश नवाएँ।।

बलिदानों की अमर कहानी यह इतिहास बताता ।
भारत भूमि स्वर्ग से सुन्दर, अद्‌भुत इससे नाता ।।.....2
हम सब आगे बढ़ें सदा नव नूतन स्वप्न सजाएँ ।।
भारत माता के चरणों.................।।

शिक्षा संस्कृति कला और विज्ञान में बढ़ते रहें कदम।
पिचहत्तर वर्षों में जग को, दिखा दिया है अपना दम ।।.....2
राष्ट्र प्रेम की गौरव गाथा बच्चा–बच्चा गाए ।
भारत माता के चरणों...........।।

हमने पाया बहुत मगर है अभी और भी पाना ।
कितनी भी बाधाएँ आए, फिर भी आगे बढ़ते जाना ।।.....2
भारत की यश कीर्ति पताका लहर–लहर लहराए ।।
भारत माता के चरणों........।।

Sanskrti mahotsv

विद्या भारती वार्षिक गीत (सत्र 2022–23)

राग भीमपलासी पर आधारित

ताल –कहरवा

हम भारत मां की संताने, हम मातृभूमि हित जीते हैं ।
हम शूरवीर हम भरत – पुत्र, सिंहों से खेला करते हैं।।

इस भूमंडल पर भारत ही, विश्वगुरू कहलाया है,
भारत ने सारे जग को, जीने का ढंग सिखाया है।
ज्ञानी ऋषि–मुनियों की हम, कर जोड़ वंदना करते हैं ।
हम शूरवीर हम भरत–पुत्र.................. ।।1।।

देश के हित सर्वस्व लुटा दें, ऐसे हम बलिदानी हैं
अपनी शक्ति से शत्रु को, याद दिलाने नानी हैं।
सुन शौर्य पराक्रम की गाथा, यमराज भी हम से डरते हैं
हम शूरवीर हम भरत–पुत्र...................... ।।2।।

अपने कौशल से शत्रु को धूल चटाई है हमने
इतिहास गवाही देता है नहीं पीठ दिखाई है हमने
दुश्मन की गोली को अपने सीने पर झेला करते हैं
हम शूरवीर हम भरत–पुत्र.......................... ।।3।।

Sanskrti mahotsv

विद्या भारती वार्षिक गीत (सत्र 2022–23)

संस्कृत गीत

Hkor| Hkkjr: uu| Hk0;e

विद्याभारती वितरति नूनं, नवचौतन्यमनवरतम् ।
ऋषिपुत्रा इति ह्वदि मानम्, भवतु भारतं ननु भव्यम् ।।
भवतु भारतं ननु भव्यम्

विद्यामन्दिरं तपोभूरिदम्, वीणावादिन्याः सदनम्
दृढसंकल्पितमनः पुनीतं, निर्मलप्राणाः स्मितवदनम्।
प्रखरबुद्धिरध्यात्मचेतना, प्रसरतु विश्वे निरन्तरम् ।।....2
ऋषिपुत्रा इति ह्वदि मानम्, भवतु भारतं ननु भव्यम् ।।
भवतु भारतं ननु भव्यम्।।1।।

राष्ट्रवन्दना मन्त्रोऽस्माकं, संस्कृतिरेषा ननु वरदा ।
उपेक्षितास्तु सहोदरा नः, शोषणमुक्ताः सन्तु सदा ।
यशोऽमृतं वै भारतभूमेः, प्रवहतु विश्वेऽहर्निशम् । 2
ऋषिपुत्रा इति ह्वदि मानम्, भवतु भारतं ननु भव्यम् ।।
भवतु भारतं ननु भव्यम् ।।2।।

शस्यश्यामला, भरतभूरियं समरसताजीवनमूल्यम् ।
ध्येयसुमार्गे प्रयान्ति वीराः, समुद्योगिनो रवितुल्याः ।
गगनमण्डले अरूणध्वजायाः, "भवतु सर्वदा संस्फुरणम्" ।.....2
ऋषिपुत्रा इति ह्वदि मानम्, भवतु भारतं ननु भव्यम् ।।
भवतु भारतं ननु भव्यम् ।।3।।

Sanskrti mahotsv

विद्या भारती का लक्ष्य

इस प्रकार की राष्ट्रीय शिक्षा-प्रणाली का विकास करना है जिसके द्वारा ऐसी युवा पीढ़ी का निर्माण हो सके जो हिन्दुत्वनिष्ठ एवं राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत हो, शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्ण विकसित हो तथा जो जीवन की वर्तमान चुनौतियों का सामना सफलतापूर्वक कर सके और उसका जीवन ग्रामों, वनों, गिरिकन्दराओं एवं झुग्गी-झोपड़ियों में निवास करने वाले दीन-दुःखी, अभावग्रस्त अपने बान्धवों को सामाजिक कुरीतियों, शोषण एवं अन्याय से मुक्त करा कर राष्ट्रजीवन को समरस, सुसम्पन्न एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए समर्पित हो।